

भारतीय मूल संस्कृति के परिप्रेक्ष्य में वर्तमान शिक्षा का स्वरूप : एक समीक्षात्मक अध्ययन

डॉ. निधि शुक्ला

संविदा सहायक अध्यापक, शिक्षा संकाय

अ. प्र: सिंह विश्वविद्यालय रीवा

सार

भारतीय संस्कृति विश्व की प्राचीनतम एवं समृद्ध संस्कृतियों में से एक है, जिसकी आधारशिला नैतिकता, आध्यात्मिकता, मानवता, सहिष्णुता तथा समग्र विकास पर आधारित रही है। भारतीय शिक्षा प्रणाली का मूल उद्देश्य केवल ज्ञानार्जन नहीं, बल्कि व्यक्ति के चरित्र, संस्कार एवं व्यक्तित्व का सर्वांगीण विकास करना था। प्राचीन भारतीय शिक्षा व्यवस्था में गुरुकुल परंपरा, नैतिक मूल्यों, अनुशासन, आत्मनिर्भरता एवं आध्यात्मिक चेतना को विशेष महत्व दिया जाता था। वर्तमान समय में शिक्षा प्रणाली में व्यापक परिवर्तन हुए हैं, जिन पर वैश्वीकरण, पाश्चात्यीकरण, तकनीकी विकास तथा बाजारीकरण का गहरा प्रभाव दिखाई देता है। आधुनिक शिक्षा प्रणाली मुख्यतः रोजगार, प्रतियोगिता एवं तकनीकी दक्षता पर केंद्रित होती जा रही है, जिसके कारण नैतिक एवं सांस्कृतिक मूल्यों का ह्रास देखने को मिल रहा है। यह शोध पत्र भारतीय मूल संस्कृति के परिप्रेक्ष्य में वर्तमान शिक्षा के स्वरूप का समीक्षात्मक अध्ययन प्रस्तुत करता है। अध्ययन में भारतीय संस्कृति एवं आधुनिक शिक्षा प्रणाली के मध्य संबंधों का विश्लेषण किया गया है तथा यह स्पष्ट करने का प्रयास किया गया है कि वर्तमान शिक्षा व्यवस्था किस सीमा तक भारतीय सांस्कृतिक मूल्यों को आत्मसात कर रही है। अध्ययन के लिए मुख्यतः द्वितीयक स्रोतों जैसे पुस्तकें, शोध पत्र, सरकारी रिपोर्ट एवं नई शिक्षा नीति 2020 का उपयोग किया गया है। अध्ययन से यह निष्कर्ष प्राप्त हुआ कि शिक्षा के क्षेत्र में तकनीकी एवं व्यावसायिक प्रगति के बावजूद मूल्यपरक एवं संस्कारयुक्त शिक्षा की आवश्यकता आज भी अत्यंत महत्वपूर्ण है। नई शिक्षा नीति भारतीय ज्ञान परंपरा एवं सांस्कृतिक मूल्यों को पुनर्स्थापित करने की दिशा में एक सकारात्मक पहल सिद्ध हो सकती है।

प्रमुख शब्द: भारतीय संस्कृति, वर्तमान शिक्षा, मूल्यपरक शिक्षा, नैतिक शिक्षा, नई शिक्षा नीति, भारतीय ज्ञान परंपरा

प्रस्तावना

भारतीय संस्कृति विश्व की सबसे प्राचीन, समृद्ध एवं जीवंत संस्कृतियों में से एक मानी जाती है। इसकी विशेषता केवल इसकी प्राचीनता में नहीं, बल्कि इसके नैतिक, आध्यात्मिक, सामाजिक एवं मानवीय मूल्यों में निहित है। भारतीय संस्कृति ने सदैव “वसुधैव कुटुम्बकम्”, “सर्वे भवन्तु सुखिनः” तथा “सा विद्या या विमुक्तये” जैसे आदर्शों के माध्यम से मानव जीवन को दिशा प्रदान की है। भारतीय समाज में शिक्षा को केवल जीविकोपार्जन का साधन नहीं माना गया, बल्कि उसे व्यक्ति के समग्र विकास, चरित्र निर्माण एवं आत्मबोध का माध्यम समझा गया है। प्राचीन भारतीय शिक्षा व्यवस्था का मुख्य उद्देश्य विद्यार्थियों में नैतिकता, अनुशासन, आत्मसंयम, सामाजिक उत्तरदायित्व एवं आध्यात्मिक चेतना का विकास करना था। गुरुकुल प्रणाली भारतीय शिक्षा की ऐसी अनूठी व्यवस्था थी जिसमें गुरु एवं शिष्य के मध्य आत्मीय संबंध स्थापित होते थे तथा शिक्षा जीवनोपयोगी एवं व्यवहारिक होती थी। प्राचीन भारत में शिक्षा का उद्देश्य व्यक्ति को केवल विद्वान बनाना नहीं, बल्कि उसे एक आदर्श नागरिक एवं श्रेष्ठ मानव बनाना था। शिक्षा के माध्यम से विद्यार्थियों को सत्य, अहिंसा, करुणा, सेवा, त्याग, सहयोग एवं राष्ट्रप्रेम जैसे मूल्यों की शिक्षा दी जाती थी। वेद, उपनिषद, रामायण, महाभारत, भगवद्गीता तथा अन्य भारतीय ग्रंथों में शिक्षा को मानव जीवन के उत्थान का प्रमुख साधन माना गया है। भारतीय ज्ञान परंपरा में शिक्षा का संबंध आत्मज्ञान एवं मोक्ष प्राप्ति से भी जोड़ा गया है। इस प्रकार भारतीय संस्कृति एवं शिक्षा का संबंध अत्यंत गहरा एवं अभिन्न रहा है। वर्तमान समय में शिक्षा प्रणाली में व्यापक परिवर्तन देखने को मिल रहे हैं। वैश्वीकरण, औद्योगिकीकरण, वैज्ञानिक विकास, सूचना प्रौद्योगिकी एवं पाश्चात्य प्रभावों ने शिक्षा के स्वरूप को पूरी तरह बदल दिया है। आज की शिक्षा प्रणाली मुख्यतः रोजगारपरक, तकनीकी एवं प्रतियोगितात्मक बनती जा रही है। विद्यालयों एवं विश्वविद्यालयों में विद्यार्थियों को अधिक अंक प्राप्त करने, प्रतियोगी परीक्षाओं में सफलता प्राप्त करने एवं व्यावसायिक दक्षता विकसित करने पर विशेष बल दिया जाता है। इसके परिणामस्वरूप शिक्षा का नैतिक एवं सांस्कृतिक पक्ष अपेक्षाकृत कमजोर होता दिखाई दे रहा है। वर्तमान शिक्षा व्यवस्था में विद्यार्थियों के व्यक्तित्व विकास, संस्कार निर्माण एवं नैतिक मूल्यों की अपेक्षा तकनीकी ज्ञान एवं व्यावसायिक कौशल को अधिक महत्व दिया जा रहा है।

आधुनिक शिक्षा प्रणाली में बढ़ती प्रतिस्पर्धा एवं भौतिकवादी दृष्टिकोण के कारण विद्यार्थियों में तनाव, असहिष्णुता, अनुशासनहीनता एवं नैतिक पतन जैसी समस्याएँ भी बढ़ती जा रही हैं। शिक्षा का अत्यधिक व्यवसायीकरण भी एक गंभीर समस्या बन चुका है। निजी शिक्षण संस्थानों की बढ़ती संख्या एवं शिक्षा के बाजारीकरण ने शिक्षा को सेवा के स्थान पर व्यवसाय का रूप दे दिया है। इसके अतिरिक्त पाश्चात्य संस्कृति के प्रभाव

के कारण भारतीय परंपराएँ, संस्कार एवं सांस्कृतिक मूल्य धीरे-धीरे कमजोर पड़ते जा रहे हैं। ऐसी स्थिति में यह आवश्यक हो जाता है कि वर्तमान शिक्षा प्रणाली का भारतीय मूल संस्कृति के संदर्भ में गंभीरतापूर्वक अध्ययन किया जाए। भारतीय संस्कृति सदैव समन्वयवादी एवं उदार रही है। इसने समय-समय पर विभिन्न संस्कृतियों एवं विचारधाराओं को आत्मसात करते हुए अपनी मौलिकता को बनाए रखा है। वर्तमान समय में भी यह आवश्यक है कि आधुनिक शिक्षा एवं तकनीकी प्रगति को स्वीकार करते हुए भारतीय सांस्कृतिक मूल्यों एवं नैतिक आदर्शों को शिक्षा का अभिन्न अंग बनाया जाए। शिक्षा केवल सूचना एवं ज्ञान प्राप्ति तक सीमित न होकर व्यक्ति के मानसिक, नैतिक, सामाजिक एवं आध्यात्मिक विकास का माध्यम बने, तभी शिक्षा का वास्तविक उद्देश्य पूर्ण हो सकेगा।

नई शिक्षा नीति 2020 भारतीय शिक्षा प्रणाली में सुधार की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम मानी जा रही है। इस नीति में भारतीय ज्ञान परंपरा, मातृभाषा आधारित शिक्षा, नैतिक शिक्षा, कौशल विकास एवं समग्र शिक्षा पर विशेष बल दिया गया है। नई शिक्षा नीति का उद्देश्य विद्यार्थियों में रचनात्मकता, आलोचनात्मक चिंतन, सांस्कृतिक जागरूकता एवं नैतिक मूल्यों का विकास करना है। यह नीति शिक्षा को केवल परीक्षा एवं अंकों तक सीमित न रखकर उसे जीवनोपयोगी एवं मूल्यपरक बनाने का प्रयास करती है। वर्तमान शिक्षा प्रणाली की चुनौतियों को देखते हुए यह आवश्यक हो गया है कि शिक्षा में भारतीय संस्कृति के मूल तत्वों को पुनः स्थापित किया जाए। नैतिक शिक्षा, योग, ध्यान, भारतीय दर्शन, संस्कृति एवं परंपराओं को शिक्षा का हिस्सा बनाकर विद्यार्थियों के सर्वांगीण विकास को सुनिश्चित किया जा सकता है। शिक्षा का उद्देश्य केवल आर्थिक विकास नहीं, बल्कि सामाजिक एवं मानवीय विकास भी होना चाहिए। भारतीय संस्कृति पर आधारित शिक्षा व्यवस्था विद्यार्थियों को जिम्मेदार नागरिक, नैतिक व्यक्तित्व एवं संवेदनशील मानव बनने की प्रेरणा प्रदान कर सकती है। प्रस्तुत अध्ययन भारतीय मूल संस्कृति के परिप्रेक्ष्य में वर्तमान शिक्षा के स्वरूप का समीक्षात्मक विश्लेषण प्रस्तुत करता है। इस अध्ययन के माध्यम से यह समझने का प्रयास किया गया है कि आधुनिक शिक्षा प्रणाली भारतीय सांस्कृतिक मूल्यों के साथ किस प्रकार सामंजस्य स्थापित कर सकती है तथा शिक्षा को अधिक मूल्यपरक, संस्कारयुक्त एवं मानवोन्मुख कैसे बनाया जा सकता है।

साहित्य समीक्षा

भारतीय शिक्षा व्यवस्था एवं भारतीय संस्कृति पर अनेक विद्वानों, शिक्षाविदों तथा शोधकर्ताओं ने विभिन्न दृष्टिकोणों से अध्ययन प्रस्तुत किए हैं। भारतीय संस्कृति का मूल आधार नैतिकता, आध्यात्मिकता, सामाजिक समरसता एवं मानव कल्याण रहा है। शिक्षा को भारतीय समाज में केवल ज्ञान प्राप्ति का माध्यम नहीं, बल्कि व्यक्ति के समग्र विकास का आधार माना गया है। प्राचीन भारतीय शिक्षा व्यवस्था में गुरुकुल प्रणाली के माध्यम से विद्यार्थियों को बौद्धिक ज्ञान के साथ-साथ नैतिक एवं आध्यात्मिक मूल्यों की शिक्षा भी प्रदान की जाती थी। आधुनिक शिक्षा प्रणाली में हुए परिवर्तनों के कारण शिक्षा के उद्देश्यों एवं स्वरूप में व्यापक परिवर्तन देखने को मिलते हैं। इसी संदर्भ में विभिन्न विद्वानों ने भारतीय संस्कृति एवं वर्तमान शिक्षा व्यवस्था के संबंधों का अध्ययन किया है। स्वामी विवेकानंद ने शिक्षा को मानव निर्माण की प्रक्रिया माना है। उनके अनुसार शिक्षा का उद्देश्य केवल सूचना देना नहीं, बल्कि व्यक्ति के भीतर निहित शक्तियों का विकास करना है। उन्होंने चरित्र निर्माण, आत्मविश्वास एवं नैतिक मूल्यों को शिक्षा का प्रमुख उद्देश्य बताया। विवेकानंद का मत था कि ऐसी शिक्षा जो व्यक्ति को आत्मनिर्भर, नैतिक एवं राष्ट्रप्रेमी न बना सके, वह अधूरी शिक्षा है। उनके विचार वर्तमान शिक्षा प्रणाली में नैतिक एवं मूल्यपरक शिक्षा की आवश्यकता को स्पष्ट करते हैं।

महात्मा गांधी ने “नई तालीम” के माध्यम से शिक्षा को श्रम, नैतिकता एवं आत्मनिर्भरता से जोड़ने का प्रयास किया। गांधीजी के अनुसार शिक्षा का उद्देश्य केवल रोजगार प्राप्त करना नहीं, बल्कि व्यक्ति के शारीरिक, मानसिक एवं आध्यात्मिक विकास को सुनिश्चित करना है। उन्होंने मातृभाषा आधारित शिक्षा, हस्तकला एवं व्यावहारिक शिक्षा पर बल दिया। गांधीजी का मानना था कि शिक्षा ऐसी होनी चाहिए जो व्यक्ति को समाज एवं राष्ट्र के प्रति उत्तरदायी बनाए। वर्तमान शिक्षा प्रणाली में बढ़ती व्यावसायिकता एवं नैतिक मूल्यों के ह्रास को देखते हुए गांधीजी के विचार अत्यंत प्रासंगिक प्रतीत होते हैं। डॉ. सर्वपल्ली राधाकृष्णन ने भारतीय शिक्षा प्रणाली में आध्यात्मिक एवं नैतिक मूल्यों के महत्व को रेखांकित किया। उनके अनुसार शिक्षा का उद्देश्य व्यक्ति में मानवीय मूल्यों, सहिष्णुता एवं सामाजिक चेतना का विकास करना है। उन्होंने भारतीय दर्शन एवं संस्कृति को शिक्षा का आधार मानते हुए कहा कि शिक्षा के माध्यम से विद्यार्थियों में सत्य, करुणा एवं मानवता जैसे गुणों का विकास होना चाहिए। राधाकृष्णन ने आधुनिक शिक्षा प्रणाली में नैतिक शिक्षा की कमी को गंभीर समस्या माना।

रवीन्द्रनाथ टैगोर ने शिक्षा को प्रकृति, संस्कृति एवं सृजनात्मकता से जोड़कर देखा। उन्होंने शिक्षा में स्वतंत्र चिंतन, कला, संगीत एवं साहित्य को विशेष महत्व दिया। टैगोर के अनुसार शिक्षा ऐसी होनी चाहिए जो विद्यार्थियों को प्रकृति एवं समाज के साथ सामंजस्य स्थापित करना सिखाए। उन्होंने शिक्षा को जीवन के अनुभवों से जोड़ने पर बल दिया। वर्तमान समय में जब शिक्षा अत्यधिक परीक्षा केंद्रित एवं प्रतिस्पर्धात्मक बन गई है, टैगोर के विचार शिक्षा में मानवीय संवेदनाओं एवं रचनात्मकता की आवश्यकता को उजागर करते हैं। श्री अरविंद ने शिक्षा को व्यक्ति की आंतरिक शक्तियों के विकास का माध्यम माना। उन्होंने कहा कि शिक्षा का उद्देश्य केवल मस्तिष्क का विकास नहीं, बल्कि शरीर, मन एवं आत्मा का समन्वित विकास करना है। श्री अरविंद के अनुसार भारतीय संस्कृति पर आधारित शिक्षा विद्यार्थियों को आत्मिक उन्नति एवं नैतिक चेतना प्रदान कर सकती है। उन्होंने शिक्षा में भारतीय दर्शन एवं आध्यात्मिक मूल्यों को महत्वपूर्ण स्थान देने की आवश्यकता पर बल दिया।

आधुनिक शोधों में यह पाया गया है कि वर्तमान शिक्षा प्रणाली में नैतिक एवं सांस्कृतिक मूल्यों का प्रभाव अपेक्षाकृत कम हुआ है। विभिन्न अध्ययनों के अनुसार शिक्षा का अत्यधिक व्यवसायीकरण एवं परीक्षा आधारित प्रणाली विद्यार्थियों में तनाव, प्रतिस्पर्धा एवं भौतिकवादी दृष्टिकोण को बढ़ावा दे रही है। कई शोधकर्ताओं ने यह निष्कर्ष निकाला है कि आधुनिक शिक्षा प्रणाली विद्यार्थियों के व्यक्तित्व विकास की अपेक्षा केवल

व्यावसायिक सफलता पर अधिक केंद्रित हो गई है। इससे विद्यार्थियों में सामाजिक एवं नैतिक उत्तरदायित्व की भावना कमजोर पड़ती जा रही है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 पर आधारित अध्ययनों में यह स्पष्ट किया गया है कि भारतीय शिक्षा प्रणाली में सुधार हेतु भारतीय ज्ञान परंपरा एवं मूल्यपरक शिक्षा को पुनः स्थापित करने का प्रयास किया जा रहा है। नई शिक्षा नीति में मातृभाषा आधारित शिक्षा, कौशल विकास, समग्र शिक्षा, नैतिक मूल्यों एवं भारतीय संस्कृति को विशेष महत्व दिया गया है। विभिन्न शिक्षाविदों ने इस नीति को भारतीय संस्कृति एवं आधुनिक शिक्षा के मध्य संतुलन स्थापित करने की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम माना है। यूनेस्को एवं अन्य अंतरराष्ट्रीय संस्थाओं द्वारा किए गए अध्ययनों में भी यह बताया गया है कि शिक्षा केवल आर्थिक विकास का साधन नहीं हो सकती, बल्कि उसे सामाजिक, सांस्कृतिक एवं नैतिक विकास से भी जोड़ना आवश्यक है। वैश्वीकरण एवं तकनीकी विकास के इस दौर में शिक्षा प्रणाली को मानवीय मूल्यों एवं सांस्कृतिक चेतना से जोड़ना समय की आवश्यकता बन गया है। साहित्य समीक्षा से स्पष्ट होता है कि भारतीय संस्कृति एवं शिक्षा का संबंध अत्यंत गहरा एवं व्यापक रहा है। विभिन्न विद्वानों एवं शोधकर्ताओं ने शिक्षा में नैतिकता, आध्यात्मिकता एवं सांस्कृतिक मूल्यों की आवश्यकता को स्वीकार किया है। आधुनिक शिक्षा प्रणाली में तकनीकी एवं व्यावसायिक प्रगति के बावजूद मूल्यपरक शिक्षा की आवश्यकता निरंतर बनी हुई है। वर्तमान अध्ययन भारतीय मूल संस्कृति के संदर्भ में वर्तमान शिक्षा प्रणाली का समीक्षात्मक विश्लेषण प्रस्तुत करते हुए यह समझने का प्रयास करता है कि आधुनिक शिक्षा एवं भारतीय सांस्कृतिक मूल्यों के मध्य संतुलन किस प्रकार स्थापित किया जा सकता है।

उद्देश्य

1. भारतीय मूल संस्कृति की विशेषताओं का अध्ययन करना।
2. वर्तमान शिक्षा प्रणाली के स्वरूप का विश्लेषण करना।
3. भारतीय सांस्कृतिक मूल्यों एवं आधुनिक शिक्षा के संबंध का परीक्षण करना।

शोध पद्धति

प्रस्तुत अध्ययन भारतीय मूल संस्कृति के परिप्रेक्ष्य में वर्तमान शिक्षा के स्वरूप का समीक्षात्मक एवं विश्लेषणात्मक अध्ययन है। इस शोध में गुणात्मक शोध पद्धति का उपयोग किया गया है, क्योंकि अध्ययन का उद्देश्य भारतीय संस्कृति एवं आधुनिक शिक्षा प्रणाली के मध्य संबंधों का विश्लेषण करना है। अध्ययन में मुख्यतः द्वितीयक स्रोतों का उपयोग किया गया है। द्वितीयक डेटा के अंतर्गत पुस्तकों, शोध पत्रों, जर्नल्स, सरकारी रिपोर्टों, राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020, यूजीसी एवं एनसीईआरटी से संबंधित दस्तावेजों तथा विभिन्न विद्वानों के विचारों का अध्ययन किया गया है। अध्ययन में भारतीय शिक्षा प्रणाली के ऐतिहासिक एवं वर्तमान स्वरूप का तुलनात्मक विश्लेषण किया गया है। शोध के लिए चयनित सामग्री का अध्ययन कर भारतीय संस्कृति, नैतिक शिक्षा, मूल्यपरक शिक्षा एवं आधुनिक शिक्षा प्रणाली से संबंधित तथ्यों को संकलित किया गया। शोध में उद्देश्यपूर्ण नमूना चयन पद्धति का उपयोग करते हुए शिक्षा एवं संस्कृति से संबंधित महत्वपूर्ण साहित्य एवं दस्तावेजों को आधार बनाया गया। डेटा विश्लेषण के लिए विषयवस्तु विश्लेषण पद्धति का प्रयोग किया गया है। संकलित तथ्यों का तार्किक एवं समीक्षात्मक अध्ययन करते हुए भारतीय सांस्कृतिक मूल्यों एवं वर्तमान शिक्षा प्रणाली के मध्य संबंधों का विश्लेषण किया गया। अध्ययन के माध्यम से यह समझने का प्रयास किया गया है कि आधुनिक शिक्षा प्रणाली भारतीय संस्कृति के मूल तत्वों को किस सीमा तक आत्मसात कर रही है तथा शिक्षा को अधिक मूल्यपरक एवं संस्कारयुक्त बनाने के लिए किन सुधारों की आवश्यकता है।

विश्लेषण एवं विवेचना

भारतीय संस्कृति एवं शिक्षा का संबंध अत्यंत प्राचीन, गहरा एवं अभिन्न रहा है। भारतीय समाज में शिक्षा को केवल ज्ञान प्राप्ति का साधन नहीं माना गया, बल्कि उसे जीवन निर्माण, चरित्र निर्माण एवं आत्मिक विकास का माध्यम समझा गया। प्राचीन भारतीय शिक्षा व्यवस्था में शिक्षा का उद्देश्य व्यक्ति को एक आदर्श नागरिक, नैतिक व्यक्तित्व एवं सामाजिक रूप से उत्तरदायी मानव बनाना था। वर्तमान समय में शिक्षा का स्वरूप तेजी से परिवर्तित हुआ है। वैज्ञानिक प्रगति, वैश्वीकरण, तकनीकी विकास एवं पाश्चात्य प्रभावों ने शिक्षा प्रणाली को आधुनिक एवं रोजगारपरक बनाया है। यद्यपि आधुनिक शिक्षा ने ज्ञान-विज्ञान एवं तकनीकी क्षेत्र में महत्वपूर्ण प्रगति की है, फिर भी भारतीय सांस्कृतिक मूल्यों एवं नैतिक आदर्शों से उसका संबंध अपेक्षाकृत कमजोर होता दिखाई देता है। प्रस्तुत अध्ययन में भारतीय मूल संस्कृति के संदर्भ में वर्तमान शिक्षा प्रणाली का समीक्षात्मक विश्लेषण किया गया है। भारतीय संस्कृति का मूल आधार नैतिकता, आध्यात्मिकता, सहिष्णुता, समरसता एवं मानवता रहा है। प्राचीन भारतीय शिक्षा प्रणाली में विद्यार्थियों को केवल पुस्तकीय ज्ञान नहीं दिया जाता था, बल्कि उनके व्यवहार, चरित्र एवं जीवन मूल्यों के निर्माण पर विशेष ध्यान दिया जाता था। गुरुकुल प्रणाली में गुरु एवं शिष्य के मध्य आत्मीय संबंध स्थापित होते थे। शिक्षा जीवनोपयोगी, व्यावहारिक एवं संस्कारयुक्त होती थी। विद्यार्थियों को अनुशासन, सेवा, त्याग, सत्य, अहिंसा एवं आत्मसंयम जैसे मूल्यों की शिक्षा दी जाती थी। शिक्षा का उद्देश्य समाज एवं राष्ट्र के प्रति कर्तव्यबोध उत्पन्न करना था। इसके विपरीत वर्तमान शिक्षा प्रणाली मुख्यतः परीक्षा, अंक एवं रोजगार पर केंद्रित होती जा रही है। विद्यालयों एवं विश्वविद्यालयों में विद्यार्थियों का मूल्यांकन मुख्यतः उनके अंकों एवं प्रतियोगी परीक्षाओं में प्रदर्शन के आधार पर किया जाता है। इससे शिक्षा का नैतिक एवं सांस्कृतिक पक्ष कमजोर होता जा रहा है।

आधुनिक शिक्षा प्रणाली में तकनीकी एवं वैज्ञानिक विकास को अत्यधिक महत्व दिया जा रहा है। डिजिटल शिक्षा, ऑनलाइन शिक्षण, स्मार्ट कक्षाएँ एवं कृत्रिम बुद्धिमत्ता जैसी तकनीकों ने शिक्षा को अधिक सुलभ एवं प्रभावी बनाया है। विद्यार्थी विश्वस्तरीय ज्ञान एवं सूचनाओं तक आसानी से पहुँच सकते हैं। तकनीकी शिक्षा ने रोजगार के अवसरों को भी बढ़ाया है। परंतु इसके साथ-साथ शिक्षा में मानवीय संवेदनाओं एवं नैतिक मूल्यों का हास भी देखने को मिल रहा है। आज विद्यार्थी शिक्षा को केवल करियर एवं आर्थिक सफलता प्राप्त करने का साधन मानने लगे हैं। शिक्षा का उद्देश्य जीवन मूल्यों एवं सामाजिक उत्तरदायित्व की अपेक्षा व्यक्तिगत सफलता तक सीमित होता जा रहा है।

वर्तमान शिक्षा प्रणाली में बढ़ती प्रतिस्पर्धा भी एक गंभीर समस्या बन चुकी है। विद्यार्थियों पर अधिक अंक प्राप्त करने एवं प्रतियोगी परीक्षाओं में सफलता प्राप्त करने का अत्यधिक दबाव रहता है। इसके कारण विद्यार्थियों में तनाव, अवसाद एवं मानसिक असंतुलन जैसी समस्याएँ बढ़ती जा रही हैं। कई बार विद्यार्थी नैतिक मूल्यों की उपेक्षा करते हुए अनुचित साधनों का प्रयोग करने लगते हैं। परीक्षा में नकल, अनुशासनहीनता एवं असहिष्णुता जैसी समस्याएँ शिक्षा के नैतिक पतन को दर्शाती हैं। भारतीय संस्कृति में शिक्षा का उद्देश्य मानसिक शांति, आत्मसंयम एवं संतुलित जीवन शैली का विकास करना था, जबकि आधुनिक शिक्षा में प्रतिस्पर्धा एवं भौतिक सफलता को अधिक महत्व दिया जा रहा है। शिक्षा का व्यवसायीकरण वर्तमान शिक्षा प्रणाली की एक प्रमुख चुनौती है। निजी शिक्षण संस्थानों की बढ़ती संख्या एवं शिक्षा के बाजारीकरण ने शिक्षा को सेवा के स्थान पर व्यवसाय का रूप दे दिया है। उच्च गुणवत्ता वाली शिक्षा केवल आर्थिक रूप से सक्षम वर्ग तक सीमित होती जा रही है। शिक्षा में बढ़ती फीस एवं व्यावसायिक दृष्टिकोण सामाजिक असमानता को भी बढ़ावा दे रहे हैं। भारतीय संस्कृति में शिक्षा को समाज कल्याण एवं मानव सेवा का माध्यम माना गया था, जबकि वर्तमान समय में शिक्षा लाभ अर्जन का साधन बनती जा रही है। इससे शिक्षा के मूल उद्देश्यों एवं नैतिक आदर्शों पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ रहा है।

पाश्चात्य संस्कृति एवं वैश्वीकरण का प्रभाव भी वर्तमान शिक्षा प्रणाली पर स्पष्ट रूप से दिखाई देता है। आधुनिक शिक्षा में अंग्रेजी भाषा, विदेशी पाठ्यक्रम एवं पाश्चात्य जीवन शैली को अधिक महत्व दिया जा रहा है। इसके कारण भारतीय भाषाएँ, परंपराएँ एवं सांस्कृतिक मूल्य धीरे-धीरे कमजोर पड़ते जा रहे हैं। विद्यार्थियों में भारतीय संस्कृति एवं इतिहास के प्रति जागरूकता अपेक्षाकृत कम होती जा रही है। शिक्षा में भारतीय ज्ञान परंपरा, वेद, उपनिषद, योग, आयुर्वेद एवं भारतीय दर्शन को पर्याप्त स्थान नहीं मिल पा रहा है। परिणामस्वरूप विद्यार्थियों में सांस्कृतिक पहचान एवं राष्ट्रीय चेतना का अभाव दिखाई देता है। हालाँकि आधुनिक शिक्षा प्रणाली के अनेक सकारात्मक पक्ष भी हैं। वर्तमान शिक्षा ने वैज्ञानिक दृष्टिकोण, तार्किक चिंतन एवं तकनीकी दक्षता को बढ़ावा दिया है। विद्यार्थियों में नवाचार, अनुसंधान एवं रचनात्मकता की भावना विकसित हो रही है। सूचना प्रौद्योगिकी एवं डिजिटल संसाधनों ने शिक्षा को अधिक व्यापक एवं सुलभ बनाया है। महिलाओं, ग्रामीण क्षेत्रों एवं पिछड़े वर्गों तक शिक्षा की पहुँच बढ़ी है। आधुनिक शिक्षा ने सामाजिक समानता एवं लोकतांत्रिक मूल्यों को भी मजबूत किया है। इसलिए यह आवश्यक नहीं है कि आधुनिक शिक्षा को पूर्णतः नकारात्मक माना जाए, बल्कि आवश्यकता इस बात की है कि आधुनिक शिक्षा एवं भारतीय सांस्कृतिक मूल्यों के मध्य संतुलन स्थापित किया जाए।

नई शिक्षा नीति 2020 इस दिशा में एक महत्वपूर्ण पहल के रूप में सामने आई है। इस नीति में भारतीय ज्ञान परंपरा, मातृभाषा आधारित शिक्षा, नैतिक शिक्षा एवं कौशल विकास पर विशेष बल दिया गया है। नई शिक्षा नीति विद्यार्थियों के समग्र विकास पर केंद्रित है। इसमें केवल अंकों एवं परीक्षाओं के स्थान पर व्यावहारिक ज्ञान, रचनात्मकता एवं नैतिक मूल्यों को महत्व दिया गया है। नीति में योग, कला, संगीत एवं भारतीय संस्कृति को पाठ्यक्रम का हिस्सा बनाने का प्रयास किया गया है। यह शिक्षा को अधिक जीवनोपयोगी एवं मूल्यपरक बनाने की दिशा में महत्वपूर्ण कदम माना जा सकता है।

भारतीय संस्कृति पर आधारित शिक्षा व्यवस्था विद्यार्थियों के व्यक्तित्व विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकती है। यदि शिक्षा में नैतिक मूल्यों, योग, ध्यान एवं आध्यात्मिकता को सम्मिलित किया जाए तो विद्यार्थियों में मानसिक शांति, अनुशासन एवं आत्मविश्वास का विकास संभव है। भारतीय संस्कृति सहिष्णुता, सहयोग एवं सामाजिक समरसता की भावना को बढ़ावा देती है। वर्तमान समय में जब समाज में हिंसा, असहिष्णुता एवं नैतिक पतन जैसी समस्याएँ बढ़ रही हैं, तब शिक्षा में भारतीय सांस्कृतिक मूल्यों का समावेश अत्यंत आवश्यक हो जाता है। भारतीय संस्कृति में “सा विद्या या विमुक्तये” अर्थात् वह विद्या जो मनुष्य को अज्ञान एवं बंधनों से मुक्त करे, शिक्षा का मूल उद्देश्य माना गया है। शिक्षा का उद्देश्य केवल रोजगार प्राप्त करना नहीं, बल्कि व्यक्ति को विवेकशील, संवेदनशील एवं जिम्मेदार नागरिक बनाना होना चाहिए। आधुनिक शिक्षा प्रणाली में तकनीकी दक्षता के साथ-साथ नैतिकता एवं मानवीय मूल्यों का समावेश समय की आवश्यकता है। यदि शिक्षा केवल भौतिक सफलता तक सीमित रह जाएगी तो समाज में नैतिक एवं सामाजिक संकट उत्पन्न हो सकते हैं।

वर्तमान शिक्षा प्रणाली में शिक्षक की भूमिका भी महत्वपूर्ण है। प्राचीन भारतीय शिक्षा व्यवस्था में गुरु को अत्यंत सम्मान प्राप्त था तथा वह केवल शिक्षक नहीं, बल्कि मार्गदर्शक एवं चरित्र निर्माता होता था। वर्तमान समय में शिक्षक एवं विद्यार्थी के संबंध औपचारिक होते जा रहे हैं। शिक्षा में मानवीय संबंधों एवं संस्कारों की कमी दिखाई देती है। इसलिए शिक्षक प्रशिक्षण में नैतिक शिक्षा एवं भारतीय सांस्कृतिक मूल्यों को विशेष महत्व दिया जाना चाहिए। शिक्षक यदि स्वयं मूल्यपरक एवं संस्कारित होंगे तो वे विद्यार्थियों में भी सकारात्मक मूल्यों का विकास कर सकेंगे। भारतीय संस्कृति एवं आधुनिक शिक्षा के मध्य संतुलन स्थापित करने के लिए शिक्षा प्रणाली में कई सुधारों की आवश्यकता है। पाठ्यक्रम में भारतीय इतिहास, दर्शन, संस्कृति एवं नैतिक शिक्षा को उचित स्थान दिया जाना चाहिए। विद्यार्थियों को केवल सैद्धांतिक ज्ञान ही नहीं, बल्कि सामाजिक एवं नैतिक उत्तरदायित्व की शिक्षा भी दी जानी चाहिए। योग, ध्यान एवं सामुदायिक सेवा जैसी गतिविधियों को शिक्षा का अनिवार्य भाग बनाया

जा सकता है। मातृभाषा आधारित शिक्षा को बढ़ावा देकर विद्यार्थियों को अपनी संस्कृति एवं परंपराओं से जोड़ा जा सकता है। वर्तमान अध्ययन से यह स्पष्ट होता है कि आधुनिक शिक्षा प्रणाली ने ज्ञान-विज्ञान एवं तकनीकी क्षेत्र में उल्लेखनीय प्रगति की है, परंतु शिक्षा के नैतिक एवं सांस्कृतिक पक्ष को पुनः सुदृढ़ करने की आवश्यकता है। भारतीय मूल संस्कृति पर आधारित शिक्षा व्यवस्था विद्यार्थियों के समग्र विकास, सामाजिक समरसता एवं नैतिक चेतना को विकसित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकती है। शिक्षा का वास्तविक उद्देश्य तभी पूर्ण होगा जब वह व्यक्ति को केवल सफल पेशेवर ही नहीं, बल्कि श्रेष्ठ मानव एवं जिम्मेदार नागरिक भी बनाए। इसलिए वर्तमान शिक्षा प्रणाली में भारतीय सांस्कृतिक मूल्यों एवं आधुनिक वैज्ञानिक दृष्टिकोण का समन्वय अत्यंत आवश्यक है।

निष्कर्ष

प्रस्तुत अध्ययन से यह स्पष्ट हुआ कि भारतीय मूल संस्कृति में शिक्षा का उद्देश्य व्यक्ति का समग्र विकास, चरित्र निर्माण एवं नैतिक मूल्यों का विकास करना था, जबकि वर्तमान शिक्षा प्रणाली मुख्यतः रोजगार, प्रतियोगिता एवं तकनीकी दक्षता पर केंद्रित होती जा रही है। आधुनिक शिक्षा ने वैज्ञानिक दृष्टिकोण, तकनीकी प्रगति एवं वैश्विक अवसरों को बढ़ावा दिया है, परंतु इसके साथ नैतिक एवं सांस्कृतिक मूल्यों का प्रभाव अपेक्षाकृत कम हुआ है। अध्ययन में यह भी पाया गया कि शिक्षा का बढ़ता व्यवसायीकरण एवं परीक्षा केंद्रित व्यवस्था विद्यार्थियों में तनाव, प्रतिस्पर्धा एवं भौतिकवादी दृष्टिकोण को बढ़ावा दे रही है। नई शिक्षा नीति 2020 भारतीय ज्ञान परंपरा, मातृभाषा आधारित शिक्षा एवं मूल्यपरक शिक्षा को पुनर्स्थापित करने का प्रयास करती है। अध्ययन से यह निष्कर्ष भी प्राप्त हुआ कि यदि शिक्षा में भारतीय संस्कृति, योग, नैतिकता एवं सामाजिक उत्तरदायित्व जैसे तत्वों को शामिल किया जाए, तो विद्यार्थियों के व्यक्तित्व एवं मानसिक विकास में सकारात्मक परिवर्तन संभव है। आधुनिक शिक्षा एवं भारतीय सांस्कृतिक मूल्यों के मध्य संतुलन स्थापित करना वर्तमान समय की महत्वपूर्ण आवश्यकता है।

सुझाव

वर्तमान शिक्षा प्रणाली को अधिक मूल्यपरक एवं संस्कारयुक्त बनाने के लिए भारतीय संस्कृति के मूल तत्वों को शिक्षा में सम्मिलित किया जाना चाहिए। विद्यालयों एवं विश्वविद्यालयों में नैतिक शिक्षा, योग, ध्यान एवं भारतीय ज्ञान परंपरा से संबंधित विषयों को अनिवार्य रूप से शामिल किया जाना आवश्यक है। शिक्षा का उद्देश्य केवल रोजगार प्राप्ति तक सीमित न होकर विद्यार्थियों के चरित्र निर्माण एवं सामाजिक उत्तरदायित्व के विकास पर भी केंद्रित होना चाहिए। मातृभाषा आधारित शिक्षा को बढ़ावा देकर विद्यार्थियों को अपनी संस्कृति एवं परंपराओं से जोड़ा जा सकता है। शिक्षक प्रशिक्षण कार्यक्रमों में नैतिक एवं सांस्कृतिक मूल्यों को विशेष स्थान दिया जाना चाहिए, ताकि शिक्षक विद्यार्थियों को केवल शैक्षणिक ज्ञान ही नहीं, बल्कि जीवन मूल्यों की शिक्षा भी प्रदान कर सकें। शिक्षा में अत्यधिक प्रतिस्पर्धा एवं परीक्षा आधारित मूल्यांकन के स्थान पर रचनात्मकता, व्यवहारिक ज्ञान एवं व्यक्तित्व विकास को महत्व दिया जाना चाहिए। इसके अतिरिक्त शिक्षा के व्यवसायीकरण पर नियंत्रण स्थापित कर गुणवत्तापूर्ण एवं समान शिक्षा व्यवस्था को सुनिश्चित करना भी आवश्यक है।

उपसंहार

भारतीय संस्कृति एवं शिक्षा का संबंध अत्यंत गहरा एवं व्यापक रहा है। भारतीय शिक्षा व्यवस्था का मूल उद्देश्य व्यक्ति का बौद्धिक, नैतिक, सामाजिक एवं आध्यात्मिक विकास करना था। प्राचीन भारतीय शिक्षा प्रणाली में संस्कार, अनुशासन, आत्मसंयम एवं मानवता जैसे मूल्यों को विशेष महत्व दिया जाता था। वर्तमान समय में शिक्षा प्रणाली ने तकनीकी एवं वैज्ञानिक क्षेत्र में उल्लेखनीय प्रगति की है, जिससे ज्ञान एवं रोजगार के नए अवसर विकसित हुए हैं। परंतु इसके साथ शिक्षा का नैतिक एवं सांस्कृतिक पक्ष अपेक्षाकृत कमजोर हुआ है। वैश्वीकरण, पाश्चात्य प्रभाव एवं शिक्षा के व्यवसायीकरण के कारण आधुनिक शिक्षा अधिक प्रतियोगितात्मक एवं रोजगारपरक बन गई है। इससे विद्यार्थियों में नैतिक मूल्यों, सामाजिक संवेदनशीलता एवं सांस्कृतिक चेतना का ह्रास दिखाई देता है। ऐसी स्थिति में भारतीय सांस्कृतिक मूल्यों एवं आधुनिक शिक्षा के मध्य संतुलन स्थापित करना अत्यंत आवश्यक हो जाता है। नई शिक्षा नीति 2020 इस दिशा में एक सकारात्मक पहल सिद्ध हो सकती है, क्योंकि इसमें भारतीय ज्ञान परंपरा, मूल्यपरक शिक्षा एवं समग्र विकास पर विशेष बल दिया गया है। अतः यह कहा जा सकता है कि शिक्षा का वास्तविक उद्देश्य केवल आर्थिक सफलता प्राप्त करना नहीं, बल्कि श्रेष्ठ मानव एवं जिम्मेदार नागरिक का निर्माण करना होना चाहिए। भारतीय मूल संस्कृति पर आधारित शिक्षा व्यवस्था आधुनिक वैज्ञानिक दृष्टिकोण के साथ समन्वय स्थापित कर विद्यार्थियों के सर्वांगीण विकास एवं राष्ट्र निर्माण में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकती है।

संदर्भ

1. राधाकृष्णन, सर्वपल्ली (2008). *भारतीय दर्शन*. नई दिल्ली: राजपाल एंड संस।
2. विवेकानंद, स्वामी (2012). *शिक्षा पर विचार*. कोलकाता: अद्वैत आश्रम।
3. गांधी, महात्मा (2009). *नई तालीम*. अहमदाबाद: नवजीवन प्रकाशन।
4. टैगोर, रवीन्द्रनाथ (2010). *शिक्षा और संस्कृति*. नई दिल्ली: साहित्य अकादमी।

5. अरविंद, श्री (2011). *भारतीय संस्कृति के आधार*. पांडिचेरी: श्री अरविंद आश्रम।
6. शर्मा, रामनाथ (2015). *भारतीय शिक्षा का इतिहास*. मेरठ: विनोद पुस्तक मंदिर।
7. अग्रवाल, जे.सी. (2018). *शिक्षा का दर्शन एवं समाजशास्त्र*. आगरा: विनोद पुस्तक मंदिर।
8. पांडेय, रामशकल (2016). *भारतीय शिक्षा प्रणाली और मूल्य शिक्षा*. वाराणसी: विश्वविद्यालय प्रकाशन।
9. सिंह, आर.पी. (2019). *भारतीय संस्कृति एवं शिक्षा*. जयपुर: राजस्थान हिंदी ग्रंथ अकादमी।
10. राष्ट्रीय शिक्षा नीति (2020). *शिक्षा मंत्रालय, भारत सरकार*. नई दिल्ली।
11. एनसीईआरटी (2017). *मूल्यपरक शिक्षा: एक रूपरेखा*. नई दिल्ली: राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद।
12. मिश्रा, एस.के. (2018). *आधुनिक शिक्षा और भारतीय समाज*. लखनऊ: हिंदी संस्थान।
13. दुबे, श्यामाचरण (2014). *भारतीय समाज और संस्कृति*. नई दिल्ली: नेशनल पब्लिशिंग हाउस।
14. उपाध्याय, बलदेव (2013). *भारतीय संस्कृति के मूल तत्व*. वाराणसी: चौखंबा प्रकाशन।
15. यूनेस्को (2021). *शिक्षा और सांस्कृतिक विकास रिपोर्ट*. नई दिल्ली: यूनेस्को प्रकाशन।